साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 2, अंक 41, जुलाई(द्वितीय), 2018

हिन्दी फिल्मों के संगीतकार नोशाद अली

(संदर्भ:- जयंती 25 दिसम्बर)

मोहे पनघट पर नंदलाल

राजेश कुमार शर्मा"पुरोहित"

हिन्दी फिल्मों के सुप्रसिद्ध संगीतकार नोशाद अली का जन्म 25 दिसम्बर 1919 को नवाबों की नगरी लखनऊ में हुआ था। इनके पिता मुन्शी वाहिद अली था। वह सत्रह साल की उम्र में ही अपनी किस्मत आजमाने के लिए मुंबई चले गए । शुरुआती संघर्षपूर्ण दिनों में उन्हें उस्ताद मुश्ताक हुसैन खां उस्ताद झंडे खां व पंडित खेम चन्द्र प्रकाश जैसे गुणी उस्तादों की सोहबत मिली।

1940 में प्रेम नगर में उन्होंने संगीत दिया ।1944 में रतन प्रदर्शित हुई। इस फ़िल्म में जोहरा बाई करण दीवान और श्याम के गीत काफी लोकप्रिय हुए। यहीं सर उनकी कामयाबी के सफर का श्री गणेश हुआ।

उन्हीने छोटे पर्दे के लिए"द सॉर्ड ऑफ टीपू सुल्तान"और "अकबर द ग्रेट" जैसे प्रसिद्ध धारावाहिक में भी संगीत दिया।

नोशाद साहब की आखरी फ़िल्म ताजमहल रिलीज होते ही फ्लॉप हो गई जिसके कारण वे बहुत दुखी हुए। जब मुगले आज़म को रंगीन किया तो नोशाद साहब बेहद खुश हुए।

नोशाद साहब ने कई फिल्मों में अपने संगीत से लोगों को झूमने को विवश कर दिया। उनके चाहने वालो की संख्या अनगिनत थी। संगीत की दुनिया के बादशाह थे।

अंदाज,आन,मदर इंडिया,अनमोल घड़ी ,स्टेशन, मास्टर, उड़न खटोला,दिल्लगी,दिल दिया दर्द लिया,शाहजहां,अमर,मुगल ए आज़म,कोहीनूर, साथी,तांगेवाला,पालकी,आईना, धर्म कांटा,पाकीज़ा,साज और आवाज़,राम और श्याम,लीडर,संघर्ष,मेरे महबूब,दास्तान प्रमुख हैं।

नोशाद जी शायर भी थे।आंठवा सुर में उनकी शायरियां प्रकाशित की गई। उनकी शायरी देखिये:-

"रंग नया है लेकिन घर ये पुराना है,ये कूचा मेरा जाना पहचाना है। क्या जानें क्यूं उड़ गए पक्षी पेड़ो से, भरी बहारों में गुलशन वीराना है।।"

नोशाद पहली फ़िल्म में संगीत देने के 64 साल बाद तक अपने साज का जादू बिखेरते रहने के बावजूद नोशाद जी ने केवल 67 फिल्मों में ही संगीत दिया लेकिन उनका कौशल इस बात की जीती जागती मिसाल है कि गुणवत्ता संख्या बल से कहीं आगे होती है।

1940 से 2006 तक उन्होंने अपना संगीत सफर अनवरत जारी रखा। नोशाद ने सुनहरी मकड़ी फ़िल्म में हारमोनियम बजाया। उनकी मुलाकात दीनानाथ जी से हुई जो प्रसिद्ध गीतकार थे। नोशाद ने मुकेश की दर्दभरी आवाज़ का इस्तेमाल अनोखी अदा और अंदाज़ में किया। शाहजहां फ़िल्म का गीत "जब दिल ही टूट गया "उनका कालजयी गीत रहा। "मोहे पनघट पर नंदलाल...जैसे गीतों को अपने सुरीले अंदाज़ में सजाया था। फिल्मी दुनिया मे नित नए अंदाज में कामयाबी की मंजिल चढ़े नोशाद के संगीत में भारतीय संगीत की अजीब शख्सियत थे। उनकी वाणी में गजब की मिठास थी। लोकगीत और लोकसंगीत की मधुरता के साथ ही शास्त्रीय संगीत में भी नोशाद जी का कोई सानी नही था।मोहम्मद रफी व लता मंगेशकर को दुनिया के सामने नोशाद अली लेकर आये।

मुगल ए आज़म का गीत आज भी लाखों जुबान पर है "जब प्यार किया तो डरना क्या..

उस्ताद गुलाम अली खान,अमीर खत्म जैसी हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की विभूतियों से नोशाद साहब ने फिल्मों के लिए गायन करवाये।

परिवार में संगीत नहीं था लेकिन उन्होंने कव्वाली व भजन से शुरुआत की। उनके गुरु गुरबत सिंह जी यूसुफ अली जी बब्बन साहब, थे जिनसे उन्होंने संगीत की बारीकियां सीखी।अनमोल घड़ी फ़िल्म के बाद आने वाली सभी नोशाद जी की फिल्मों सिल्वर जुबली,गोल्डन जुबली के साथ ही डायमंड जुबली मनाई।

1952 में बैजू बावरा का संगीत देने वाले नोशाद करोड़ों दिलों पर छा गए। इसी फिल्म के कारण इन्हें पहली बार बेस्ट म्यूजिक डायरेक्टर का फिल्मफेयर अवार्ड भी मिला था। 1981 में सिने जगत का सबसे बड़ा सम्मान दादा साहब फाल्के अवार्ड से नवाजा गया। 1992 में इन्हें देश के तीसरे सबसे बड़े नागरिक सम्मान पदम भूषण से सम्मानित किया। हिंदुस्तान के अजीमोशान शहंशाह ने 65 वर्षों तक फिल्मी जगत को अपने संगीत से नवाजा। प्रेमनगर से ताजमहल तक का सफर करोड़ो दिलों में आज भी जिन्दा है। उनका संगीत अमर है। संगीत प्रेमियों के लिए नोशाद फरिश्ते हैं। नोशाद अमर रहे।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें